ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679
Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

# स्वतंत्रता के बाद नव भारत में मजदूर और महिलाओं का योगदान

## डॉ० स्वर्ण मणि

वरीय सहायक प्राध्यापिका, इतिहास विभाग, टी० पी० कॉलेज, मधेपुरा

**सार**– स्वतंत्रता के पश्चात नव भारत के निर्माण में मजदूर वर्ग और महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी रहा है। औद्योगिकीकरण, आधारभूत संरचना के विकास तथा आर्थिक प्रगति में मजदूर वर्ग ने अपने परिश्रम, संगठन और आंदोलनों के माध्यम से निर्णायक भूमिका निभाई। श्रम आंदोलनों के परिणामस्वरूप श्रम कानूनों, न्यूनतम वेतन, कार्यस्थल सुरक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार संभव हो सके, जिससे मजदूरों के जीवन स्तर में सुधार आया। दूसरी ओर, महिलाओं ने शिक्षा, उद्यमिता, सामाजिक जागरूकता और नीति निर्माण में सक्रिय सहभागिता निभाकर राष्ट्रनिर्माण को नई दिशा प्रदान की। शिक्षित होकर शिक्षिका, उद्यमी एवं विभिन्न पेशेवर भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी ने सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी और लैंगिक समानता को बल दिया। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण ने आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक परिवर्तन को गति दी। मजदूरों और महिलाओं के संयुक्त प्रयासों से सामाजिक समरसता, आर्थिक स्थिरता और समावेशी विकास को मजबूती मिली। इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद मजदूर और महिलाओं का योगदान नव भारत के सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक विकास का सशक्त आधार सिद्ध हुआ है।

**मुख्य शब्द**– नव भारत, मजदूर वर्ग, महिला सशक्तिकरण, औद्योगिकीकरण, श्रम आंदोलन, सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय विकास।

### 1. भूमिका

स्वतंत्रता के बाद के भारत में मजदूर वर्ग एवं महिलाओं का योगदान देश के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस कालखंड में मजदूरों ने उद्योगिक संरचनाओं के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई, जिसके परिणामस्वरूप देश में आर्थिक प्रगति संभव हो सकी। मजदूर वर्ग ने न केवल अपने श्रम का उपयोग कर उत्पादन की प्रक्रिया को गतिशील किया, बल्कि अपनी एकता और संघर्षशीलता के माध्यम से श्रम अधिकारों एवं कार्यस्थल सुरक्षा के संदर्भ में नई नीतियों के निर्माता भी बने। इस प्रक्रिया में मजदूर आंदोलनों का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है, जिन्होंने श्रम कानूनों में आवश्यक सुधार और सामाजिक न्याय का आग्रह किया। इन आंदोलनों ने सरकार पर दबाव बनाकर मजदूरों के हित में अनेक सुविधाएँ एवं सुरक्षा उपाय सुनिश्चित कराए।[1]

इतना ही नहीं, स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं ने भी सामाजिक बदलाव के मद्देनजर सक्रिय भागीदारी प्रस्तुत की। शिक्षित एवं शिक्षिका बनकर उन्होंने शिक्षा एवं जागरूकता के क्षेत्र में अपनी छवि स्थापित की। ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर महिलाओं ने अपने उद्यमों का रास्ता चुना, जिससे आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी। यह सशक्तिकरण सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक बना, जिसने न केवल पुरुषप्रधान समाज में नई दिशाएँ दिखायीं, बल्कि नीति में भी सुधार किए। महिलाओं की सक्रिय भूमिका ने समाज में भेदभाव एवं असमानताओं को कम करने में मदद की, जिससे समाज में समानता एवं स्वतंत्रता का अर्थ अधिक व्यापक हो सका। इन दोनों समूहों का योगदान स्वतंत्रता के बाद के भारत के विकास में अनिवार्य और अभिन्न रहा है, जो न केवल आर्थिक बल्कि

सामाजिक सुधारों का भी प्रतिबिंब है।

## 2. मजदूर वर्ग की माँगें और योगदान

स्वतंत्रता के बाद नव भारत के विकास में मजदूर वर्ग का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया के दौरान मजदूरों ने उत्पादन की मुख्य धारा में अपनी भागीदारी निभाई, जिससे देश की औद्योगिक वृद्धि को गति मिली। निर्माण कार्यों में अत्यधिक श्रमशक्ति की आवश्यकता थी, जिसका सामना मजदूर वर्ग ने दृढ़ता और परिश्रम के साथ किया। उन्होंने आर्थिक प्रगति के संचालन में समर्थ भूमिका निभाई और पदकनेजतपमससम उत्पादन में तेजी लाने में सहायक सिद्ध हुए। इसके साथ ही, मजदूर आंदोलनों ने श्रमिकों के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने और श्रमिक हितों की रक्षा हेतु अनेक संघर्ष किए। ये आंदोलनों श्रमिकों की मंशा और आंदोलनशीलता का प्रमाण थे, जिन्होंने श्रम क़ानूनों में सुधार और बेहतर कार्य परिस्थितियों की स्थापना में आंदोलनकारी भूमिका निभाई। सरकार ने भी इन आंदोलनों की प्रेरणा से श्रमिक हितों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से नीतियों में सुधार किए; मसलन, श्रम कानून, न्यूनतम वेतन और कार्य समय जैसे नियम लागू किए गए। मूलभूत श्रम संरचना का विकास और मजदूर वर्ग की सक्रिय भागीदारी, नव भारत के आर्थिक स्वरूप के निर्माण में अपरिहार्य सिद्ध हुई। इन सभी प्रयासों का परिणाम स्वरूप मजदूर वर्ग ने न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता विकसित की, बल्कि देश के आर्थिक और औद्योगिक विकाश में अभिन्न भूमिका भी निभाई। इससे व्यवसायिक एवं औद्योगिक नेटवर्क का सशक्तीकरण हुआऔर देश की आर्थिक स्वतंत्रता स्थापित हुई।[2]

### 2.1. औद्योगिकीकरण और निर्माण कार्य

स्वतंत्रता के बाद भारत में औद्योगिकीकरण का दायरा तेजी से विस्तारित हुआ, जिससे निर्माण कार्यों का महत्व तथा विविधता बढ़ी। इसके अंतर्गत भारी उद्योग, सूक्ष्म उद्योग, ढांचागत विकास, सड़कें, पुल, रेलवे जैसी परियोजनाएं शामिल थीं। ये परियोजनाएं देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का आधार बनीं। इन कार्यों में मुख्यतः मजदूर वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण रही; उन्होंने श्रम एवं समर्पण से निर्माण कार्यों को संचालित किया। मजदूरों ने अपने परिश्रम से औद्योगिक इकाइयों एवं बुनियादी अवसंरचनाओं का निर्माण किया, जो राष्ट्रीय विकास के स्तंभ साबित हुए।[3]

यह प्रक्रिया विभिन्न क्षेत्रों में विकास के साथ ही व्यावसायिक कौशल और तकनीकी दक्षता के रूप में मजदूरों की क्षमताओं को भी बढ़ावा देती रही। निर्माण कार्यों में मजदूरों का योगदान मेहनत और संकल्प का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब था, जिसकी बदौलत देश में औद्योगिक ढांचे का विस्तार संभव हो पाया। इसके साथ ही, इन परियोजनाओं ने ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में रोजगार के अवसर बढ़ाए और व्यापक पैमाने पर आर्थिक साक्षरता को प्रोत्साहित किया। मजदूर वर्ग ने न केवल संरचनात्मक सुधारों में भागीदारी निभाई, बल्कि राष्ट्रीय आर्थिक राह में अपनी अनिवार्यता का परिचय भी दिया। इस प्रक्रिया में, उनके परिश्रम और स्थिरता ने भारत के स्वाधीनता के बाद के आर्थिक विकास के पथ को मजबूत बनाया।

### 2.2. मजदूर आंदोलनों का प्रभाव

मजघूर आंदोलनों का प्रभाव स्वतंत्रता के बाद नव भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे पर गहरा पड़ता है। इन आंदोलनों ने मजदूर वर्ग की आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ ही उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता भी पैदा की। प्रथम स्तर पर, औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में मजदूरों ने अपनी मेहनत से उद्योगों का विकास सुनिश्चित किया, जिससे देश के आर्थिक संसाधनों का उत्पादन बढ़ा। इसी क्रम में, मजदूर आंदोलनों ने वेज अधिनियम, न्यूनतम वेतन निर्धारण, कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण और श्रम कानूनों के लागू होने में भूमिका निभाई। यह सतत संघर्ष मजदूर वर्ग को अपनी मांगों के प्रति सजग बनाता गया।[4]

उन आंदोलनों का प्रभाव न केवल मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने तक सीमित रहा, बल्कि यह सामाजिक जागरूकता और श्रम अधिकारों की प्राप्ति का मजबूत माध्यम भी बनी। मजदूर संगठनों ने सरकार को नियमित रूप से ध्यान दिलाया कि श्रम का सम्मान और उचित वेतन मजदूर कल्याण का बुनियादी पहलू हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होती है। इन आंदोलनाओं के कारण श्रमिक वर्ग में संगठित कामकाज की भावना का विकास हुआ, जिससे मजदूरी और कार्य के मानकों में सुधार हुआ।

वहीं, मजदूर आंदोलनों ने श्रम कानूनों के अधिक कार्यान्वयन की दिशा में प्रेरणा दी। इससे उद्योगों में श्रमिकों

के अधिकारों का संरक्षण हुआ और उन्हें बेहतर जीवन–शैली प्राप्त करने का अवसर मिला। परिणामस्वरूप, सार्वजनिक जागरूकता में वृद्धि हुई और मजदूर वर्ग ने अपने अधिकारों के लिए संगठित होकर अपनी स्थिति मजबूत की। इन प्रयासों से समाज में श्रम–संबंधी अव्यवस्थाओं में सुधार आया और मिसाल के रूप में यह आंदोलन स्वतंत्रता के बाद के भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास का एक प्रेरक स्रोत बन गया।[5]

### 2.3. सरकार की नीतियाँ और मजदूर सुरक्षा

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने मजदूर वर्ग के संरक्षण एवं साथी समाज के विकास को सुनिश्चित करने के लिए कई नीतिगत कदम उठाए। इनमें सबसे प्रमुख थे श्रम कानूनों का निर्माण और संशोधन, ताकि कार्यस्थल पर मजदूरों का अधिकार सम्मानित हो सके। सर्वप्रथम, 1948 में औद्योगिक विवाद अधिनियम का प्रावधान मजदूरों को उनके हितों की रक्षा हेतु किया गया, जिससे श्रमिक संगठनों को अपने अधिकारों के लिए प्रभावी ढंग से संघर्ष करने का अवसर मिला। इसके अतिरिक्त, 1950 का संविदान मजदूरों के हित में श्रम संबंधी प्रावधानों का आधार बना, जैसे कि न्यूनतम वेतन निर्धारण, कार्य अवधि सीमित करना एवं सुरक्षित कार्य पर्यावरण का निर्माण।

सरकार ने औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरों की सुरक्षा के उपायों को मजबूत करने हेतु श्रम कार्यालय और निरीक्षण तंत्र की स्थापना की। इन तंत्र के माध्यम से श्रम कानूनों का पालन सुनिश्चित किया गया तथा कार्यस्थलों की नियमित जाँच की गई। इसके साथ ही, मजदूरों के सामाजिक सुरक्षा के हित में बीमे एवं पेंशन योजनाएँ लागू की गईं, जिससे उनके जीवन यापन का स्तर बेहतर हो सका। इस तरह की नीतियों का मुख्य उद्देश्य था, मजदूरों को बिना भय एवं असुरक्षा के अपनी मजदूरी और अधिकारों के लिए मुकाबला करने का वातावरण प्रदान करना।[6]

इसके अलावा, मजदूर संघों को सक्रिय करने के लिए सरकार ने उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक भागीदारी का भी अवसर प्रदान किया। श्रम सुधारों के साथ ही, महिलाओं एवं समुदायों के लिए विशिष्ट प्रावधान बनाए गए, ताकि वे भी श्रम बाजार में समान भागीदारी निभा सकें। संक्षेप में, सरकार की इन नीतियों ने न केवल मजदूर वर्ग को सुरक्षित किया, बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक विकास में उनकी भागीदारी को भी बढ़ावा दिया। वर्तमान में उपलब्ध सामाजिक एवं आर्थिक सुधारों के आधार पर, भारत के मजदूर वर्ग का सामाजिक और आर्थिक जीवन अधिक सशक्त हुआ है।

## 3. महिलाओं का सशक्तिकरण और भूमिका

स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं ने राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। शिक्षित होने के बढ़ते अवसरों ने महिलाओं को स्वाभाविक रूप से शक्ति प्रदान की, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुईं और सामाजिक बदलाव में सहभागी बनीं। महिला शिक्षण संस्थानों का विस्तार और उच्च शिक्षण प्राप्त करने का प्रचलन ने भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। इससे न केवल वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुईं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उनकी स्थिति में सुधार आया। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में महिलाओं ने उद्यमिता को अपनाया। स्वच्छता, सिलाई, हथकरघा, कृषि और छोटे उद्योग क्षेत्र में वे स्वरोजगार के माध्यम से अर्थव्यवस्था में योगदान देने लगीं। यह सामाजिक और आर्थिक बदलाव का प्रतीक था, जो श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करता है। महिलाओं ने समाज में बदलाव लाने के लिए विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया, जिसने सामाजिक परिपाटियों और रूढ़ियों को चुनौती दी। नीति सुधारों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों की रक्षा हुई, जैसे वहिं आजादी के बाद महिलाओं के लिए सुरक्षितशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं व स्वावलंबन योजनाएं शुरू की गईं। ग्रामीण और शहरी दोनों इलाकों में महिलाओं की स्वतंत्रता और जागरूकता के साथ ही उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ। उन्होंने सामाजिक ताने–बाने को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार, महिलाओं का सशक्तिकरण और उनकी सक्रिय भागीदारी ने न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि पूरे समाज के विकास में प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किए। इन प्रयासों ने भारत के समग्र राष्ट्रनिर्माण को मजबूती दी और महिलाओं को समान अवसर प्रदान कर समाज में संतुलित विकास का आधार स्थापित किया।[7]

### 3.1. शिक्षित होना और शिक्षिका बनना

स्वतंत्रता के बाद नव भारत के निर्माण में शिक्षितता का महत्व अत्यंत स्पष्ट हुआ। विशेषकर महिलाओं ने शिक्षण क्षेत्र में कदम बढ़ाते हुए समाज में परिवर्तन की नई दिशा का सृजन किया। शिक्षिका बनना, न केवल एक व्यावसायिक विकल्प था, बल्कि महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम भी। स्वतंत्रता के

बाद अनेक महिलाओं ने शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षिका बनकर शिक्षण कार्य में अपनी भूमिका निभाई। इस प्रक्रिया ने सामाजिक धारणा में बदलाव लाया, जिससे महिलाओं का सम्मान और स्वामित्व की भावना मजबूत हुई। शिक्षित महिलाओं ने न केवल अपने परिवारों में बल्कि व्यापक समाज में भी जागरूकता का संचार किया। उन्होंने बच्चों को पढ़ाने के साथ–साथ समाज में समानता और स्वतंत्रता का संदेश फैलाया। इस संदर्भ में अनेक महिला शिक्षिकाओं ने शिक्षा के माध्यम से समाज की पिछड़ी रूढ़ियों को चुनौती दी। शिक्षिका बनने का अर्थ केवल शिक्षण कार्य नहीं था, बल्कि यह महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने का प्रतीक था। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और वे समाज में आत्मविश्वास के साथ स्थापित हुईं। समय के साथ, महिला शिक्षिकाओं की संख्या बढ़ी और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का महत्व स्थापित हुआ। यह क्रम स्वतंत्रता के बाद महिलाओं के शैक्षिक साक्षरता और सामाजिक सशक्तिकरण का प्रमाण है, जिसने नए भारत के निर्माण में प्रेरणा का कार्य किया। इन महिलाओं की शिक्षिता की यात्रा ने न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को प्रेरित किया, बल्कि समाज में लैंगिक समानता के संदर्भ में भी लंबी दूरी तय की। शिक्षित और शिक्षिका बनकर महिलाओं ने समाज में नेतृत्व की स्थिति हासिल की और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

### 3.2. ग्रामीण और शहरी महिला उद्यमिता

ग्रामीण और शहरी महिला उद्यमिता ने स्वतंत्रता के बाद नव भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गांवों और शहरी क्षेत्र में महिलाओं की स्वावलंबन पदपजपंजपअम ने आर्थिक गतिविधियों का विस्तार किया, परिवारों की जीवनस्तर में सुधार किया, और समुदाय में जागरूकता एवं बदलाव लाए। कृषक महिलाएँ खेती–किसानी में सक्रिय भागीदारी के साथ–साथ नए व्यवसायों का आरंभ कर अपने आर्थिक स्थिति को मजबूत करने लगीं। शहरी क्षेत्रों में घरेलू उद्योग, हस्तकला, और सूक्ष्म व्यवसाय के क्षेत्र में महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा। यह उद्यमिता मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में उत्क्रमण रही हैं, जिसने उन्हें सामाजिक दृष्टि से भी सशक्त बनाया।

महिला उद्यमिता का विकास उनके शैक्षिक स्तर और कौशल विकास के साथ जुड़ा रहा। निरंतर प्रशिक्षण और साक्षरता कार्यक्रमों ने महिलाओं को व्यवसायिक मूल्यों एवं प्रबंधन कौशल से सशक्त किया। शहरी महिला उद्यमी अपनी सृजनात्मकता और नवाचार के बल पर नई वाणिज्यिक प्रवृत्तियों को अपनाने में सक्षम हुईं। अनेक महिला संगठनों और सामाजिक संस्थाओं ने इन उद्यमियों को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान की, जिससे आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा दोनों में वृद्धि हुई। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाएँ न केवल खेत–खलिहान या पारंपरिक उद्योग तक सीमित रह गईं, बल्कि वे छोटे उद्योग, सहकारी समितियाँ, विनिर्माण और विपणन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गईं।[8]

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में, ग्रामीण और शहरी महिला उद्यमिता ने रूढ़ियों को तोड़ने का कार्य किया। इससे महिलाओं का सामाजिक सम्मान बढ़ा, उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैली और वे परिवार व समाज में अधिक सक्रिय भागीदारी करने लगीं। आज स्वरोजगार एवं शिक्षा प्राप्ति जैसे पहलुओं में महिलाओं का बड़ा योगदान दिखाई देता है। इस सबके परिणामस्वरूप, स्वावलंबी महिलाओं ने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है, जिसने देश के समग्र विकास में स्थायी आधार प्रदान किया है।

### 3.3. सामाजिक परिवर्तन और नीति सुधार

स्वतंत्रता के बाद समाज में हो रहे व्यापक परिवर्तन और नीतिगत सुधारों ने महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक परिदृश्य को काफी हद तक बदला है। सामाजिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण प्रभाव महिलाओं के सशक्तिकरण में दिखाई देता है, जहां उनकी भूमिका केवल घरेलू क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गई। महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के दृष्टिकोण ने उनकी स्थिति में अभूतपूर्व बदलाव किए। शिक्षित महिला अपनी पहचान बनाने के साथ–साथ शिक्षिका जैसे कई महत्वपूर्ण भूमिकाओं में भी सक्रिय हो रही हैं, जो समाज में जागरूकता और बदलाव का वाहक बन रही हैं।[9]

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के प्रयास भी नई नीतियों का हिस्सा बने हैं, जिनसे महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता मिली है। सरकारी योजनाओं, स्वरोजगार के कार्यक्रमों और विधायी सुधारों के माध्यम से उनके कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ है। नीतिगत आधार पर महिलाओं के अधिकारों की मान्यता और संरक्षण मजबूत हुआ है, जिससे उनके लिए उचित अवसर और सुरक्षित कार्य

वातावरण सुनिश्चित हो सके। विशेष संसाधनों, योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संजाल ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया है, साथ ही उनके सामाजिक स्थान को भी प्रोत्साहित किया है।[10]

सामाजिक परिवर्तन और नीति में आए सुधारों ने महिलाओं और श्रमिक वर्ग दोनों को समान अवसर प्रदान करने में मदद की है। वे समुदाय में नेतृत्व और निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा बन रही हैं। सरकार और विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए सामाजिक अभियान और जागरूकता कार्यक्रमों से पारंपरिक मान्यताओं में बदलाव आया है, जो असमानताओं को कम करने और समावेशी समाज का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। इन सुधारों का परिणाम है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लैंगिक समानता के मूल्य को समाज में स्थान मिला है, जिससे सामाजिक स्थिरता और विकास को बल मिला है।

इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद किए गए सामाजिक और नीतिगत सुधारों ने महिलाओं के साथ–साथ मजदूर वर्ग को भी नई दिशा प्रदान की है, जिसने नव भारत के सामाजिक और आर्थिक संरचना में स्थायी बदलाव लाए हैं।[11]

## 4. संयुक्त योगदान और चुनौतियाँ

स्वतंत्रता के बाद नव भारत के विकास में मजदूरों एवं महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। दोनों वर्गों ने अपने संघर्ष, परिश्रम और समर्पण के माध्यम से देश की सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाई है। मजदूर वर्ग ने औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को गति देते हुए निर्माण कार्यों में अहम भूमिका निभाई। उनके अथक प्रयासों ने उद्योगों को स्थापित करने और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद की, जिससे देश की उत्पादन क्षमता बढ़ी। साथ ही, मजदूर आंदोलनों ने श्रम अधिकारों के संरक्षण और बेहतर कार्यस्थल परिस्थितियों के लिए संघर्ष किया। इन आंदोलनों ने मजदूरों की स्वायत्तता की दिशा में मील के पत्थर साबित हुए और श्रम कानूनों में सुधार करने में सहायता पहुँचाई। सरकार ने भी इन प्रयासों को समर्थन देने के उद्देश्य से श्रमिक हितैषी नीतियों का विकास किया, जिसके अंतर्गत मजदूरों की सुरक्षा, सामाजिक कल्याण और जीवन स्तर सुधारने पर बल दिया गया। दूसरी ओर, महिलाओं ने सामाजिक बदलाव लाने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता प्रकट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षित होते हुए वे शिक्षिका, डॉक्टर, वकील और उद्यमी बनकर समाज की शैक्षिक और आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने लगीं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं ने स्वरोजगार एवं स्वरोजगार की दिशा में प्रयास किए, जिससे आर्थिक स्वावलंबन बढ़ा। सामाजिक संस्थानों एवं नीतियों में सुधार के माध्यम से उनकी सहभागिता को प्रोत्साहित किया गया। दोनों समूहों की भागीदारी ने सामाजिक धाराओं में परिवर्तन, लैंगिक समानता एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने में सशक्त भूमिका निभाई। इन बदलावों से न केवल व्यक्ति के जीवनयापन का स्तर सुधरा, बल्कि समग्र रूप से राष्ट्र की औद्योगिक प्रगति और सामाजिक समरसता को भी बल प्राप्त हुआ। अतः, मजदूर और महिलाओं का ये संयुक्त योगदान राष्ट्र के समुचित विकास में एक प्रेरक शक्ति रहा।[12]

### 4.1. सामाजिक बदलाव

स्वतंत्रता के बाद नव भारत में सामाजिक बदलाव का आगाज़ और सांस्कृतिक गतिविधियों के उल्लेखनीय प्रभाव से हुआ। यह परिवर्तन सामाजिक परिदृश्य में व्यापक हुआ, जिसमें श्रमिक वर्ग एवं महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाज में मौजूद परंपरागत जाति, वर्ग और लैंगिक विभेदों को चुनौती देते हुए सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया गया। आधुनिक शिक्षण संस्थानों की स्थापना और शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ने के साथ ही महिलाओं की शिक्षा की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई। इससे महिलाएं न केवल घर की सीमा से बाहर निकलकर अपने स्वतंत्र विचार व्यक्त करने लगीं, बल्कि सार्वजनिक जीवन में भी सक्रिय भागीदारी बनाए रखीं।

मजदूरों का सामाजिक स्तर विकसित करने के लिए श्रमिक आंदोलनों ने प्रेरक कार्य किया। सामाजिक जागरूकता बढ़ी, मजदूरों के अधिकारों और श्रमिक कल्याण के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित की गईं। इन आंदोलनों ने न केवल श्रमिकों के उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाई, बल्कि समाज में श्रम वर्ग के प्रति सम्मान और जागरूकता का भी प्रसार किया। महिलाओं ने कठोर परंपराओं और गतिहीन जीवनशैली से बाहर आकर अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। वे शिक्षित होने लगीं, स्वावलंबी बनने लगीं, और सामाजिक जोखिमों को सहन कर नए सामाजिक संबंध बनाते हुए समानता और सम्मान का अनुभव करने लगीं।

सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में नीति–निर्माण एवं प्रोत्साहन योजनाओं का भी योगदान रहा। सरकार द्वारा लागू की गई महिला शिक्षा परियोजनाएं और श्रम कानून समाज में जागरूकता लाने में सहायक साबित हुईं। इस सबके परिणामस्वरूप सामाजिक ढांचे में परिवर्तन आया, जहां श्रमिक और महिला वर्ग दोनों ने नई संभावनाओं के द्वार खोलें। शिक्षा, अधिकार और सामाजिक मान्यताओं में बदलाव के माध्यम से समाज में समावेशिता का दृष्टिकोण विकसित हुआ। इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद का समय सामाजिक बदलाव के नए आयाम स्थापित करने वाला रहा, जिसने समाज के हर अंग में नई क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।[13]

### 4.2. आर्थिक सुधार

आर्थिक सुधार की प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद देश के विकास का एक महत्वपूर्ण घटक बन गई। इन सुधारों ने उद्योगों और बाजार व्यवस्था को नई दिशा दी, जिससे व्यापक आर्थिक बदलाव आए। इस सुधार की शुरुआत 1991 में हुई विपरीत आर्थिक व्यवस्था को उदार बनाने, विदेशी निवेश को आकर्षित करने और घरेलू उद्योगों का आधुनिकीकरण करने के उद्देश्य से हुई। इन प्रयासों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा देना और रोजगार के नए अवसर सृजित करना था। मजदूर वर्ग ने इन परिवर्तनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेषकर औद्योगिक क्षेत्रों में जो नई आर्थिक नीतियों का लाभ उठाने के लिए तैयार थे। उनके श्रम की अनियमितता और अधिकारों की रक्षा के लिए सरकार ने विभिन्न विधायी कदम उठाए, लेकिन इसके साथ ही मजदूर वर्ग को भी नई पेशागत क्षमताओं और कौशल का अधिग्रहण करना पड़ा। इस प्रक्रिया में, निजी क्षेत्र की भागीदारी और विदेशी निवेश का महत्व बढ़ा, जिससे नए उद्योग और स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न हुए। परिणामस्वरूप, मजदूरों की आय में वृद्धि हुई और आर्थिक विविधता सुनिश्चित हुई। इन सुधारों का प्रभाव महिलाओं के आर्थिक समावेशन में भी देखा गया। अधिक व्यवसायिक अवसरों के चलते महिलाएं स्वरोजगार में कदम बढ़ाने लगीं और प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता के क्षेत्र में सक्रिय हुईं। कुल मिलाकर, आर्थिक सुधार ने न केवल उत्पादन और रोजगार के नए स्तर स्थापित किए, बल्कि मजदूर और महिला दोनों ने मिलकर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में योगदान दिया। इन समर्पित प्रयासों से सामाजिक बदलाव भी संभव हो सके, जिससे भारत में समान अवसर एवं समान रोजगार की दिशा में प्रगति सुनिश्चित हुई।[14]

### 4.3. समकक्ष अवसर और रोजगार

स्वतंत्रता के पश्चात नव भारत में समकक्ष अवसर और रोजगार की दिशा में हुई प्रगति ने दोनों ही वर्गों के लिए नई संभावनाएँ एवम् चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। प्रारंभ में, कार्यस्थलों पर लैंगिक भेदभाव और अवसरों की असमानता के कारण महिलाओं और मजदूरों के समक्ष कई बाधाएँ थीं। लेकिन समय में हुए सामाजिक एवं आर्थिक बदलावों के साथ–साथ सरकारी नीतियों और आंदोलनात्मक प्रयासों ने इन वर्गों के बीच समानता की दिशा में प्रगति की। श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने लगी, विशेषकर औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में। शिक्षित महिलाओं द्वारा शिक्षिका, कॉर्पोरेट सेक्टर और प्रशासनिक पदों पर कार्यरत होने के साथ–साथ ग्रामीण एवं शहरी उद्यमिता के क्षेत्र में भी वे आत्मनिर्भर बन रही हैं। इसके अतिरिक्त, मजदूर वर्ग के लिए न्यूनतम वेतन, कामकाजी घंटे एवं श्रम सुरक्षा जैसे कार्यक्रम लागू किए गए, जिससे उनके कार्य की प्रकृति सुधरी और अवसरों का विस्तार हुआ। सरकारी नीतियों में लैंगिक समानता को संरक्षण देने वाले प्रावधान शामिल किए गए, ताकि महिलाओं को स्वतंत्र रूप से रोजगार के अवसर मिल सकें। इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि समाज में महिलाओं और मजदूरों का सामाजिक और आर्थिक स्तर ऊपर उठा। फिर भी, अभी भी बराबरी के अवसरों एवं कार्यस्थल पर भेदभाव जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनके समाधान हेतु सतत प्रयास जरूरी हैं। समाज में जागरूकता एवं नीति में सुधारों के माध्यम से इन वर्गों को समान अवसर प्रदान करना वर्तमान में ज्ञात लक्ष्यों में है, ताकिवे अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकें और राष्ट्रीय विकास में अपनी भूमिका निभाएँ।

## 5. राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव

स्वतंत्रता के बाद नव भारत के निर्माण में मजदूर और महिलाओं का योगदान राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। मजदूर वर्ग ने औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाते हुए निर्माण कार्यों में सक्रिय भागीदारी दी। उनके परिश्रम और समर्पण ने विभिन्न उद्योगों की स्थापना एवं विस्तार में अहम भूमिका निभाई, जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई और ग्रामीण–शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए। मजदूर आंदोलनों ने श्रम अधिकारों एवं कार्य–स्थल सुरक्षा हेतु न केवल जागरूकता फैलाई, बल्कि श्रम कायदों में सुधार

भी करवाए, जिससे मजदूर वर्ग की जीवन दशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। सरकार ने नई नीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से मजदूरों की सुरक्षा एवं कल्याण सुनिश्चित करने का प्रयास किया, जिससे उन्हें स्थायी रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा का आश्वासन मिला।

महिलाओं का सशक्तिकरण और सामाजिक भूमिका भी राष्ट्रीय विकास का मूलभूत आधार बनी। शिक्षित महिला वर्ग ने अपने ज्ञान एवं कौशल के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अभिव्यक्ति दी, जिससे महिला शिक्षा तथा व्यवसाय में पारंपरिक रूढ़ियों का उन्मूलन हुआ। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा उद्यमिता को प्रोत्साहित किया गया, जिससे वे आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकीं। महिला स्वाभाविक रूप से सामाजिक बदलाव की अग्रणी शक्ति बन गईं, और नीतिगत सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया।

इन दोनों वर्गों का संयुक्त योगदान न केवल सामाजिक और आर्थिक बदलाव लाया बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर स्थिरता, समावेशन और समान अवसर के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ। मजदूर और महिलाओं की सहभागिता से भारत में श्रम एवं समाज व्यवस्था परिवर्तन को प्राप्त हुआ, जिससे राष्ट्र की स्थिरता, आत्मनिर्भरता और दीर्घकालिक विकास संभावित हो सका। इस प्रकार, उनका योगदान राष्ट्र के व्यापक विकास के समर्थक एवं प्रेरक आधार बना।[15]

### 6. निष्कर्ष

स्वतंत्रता के पश्चात नव भारत के निर्माण में मजदूरों और महिलाओं ने बहुआयामी और समान रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मजदूर वर्ग ने औद्योगिकीकरण की दिशा में बड़ा योगदान किया, जिसके कारण देश में औद्योगिक आधार मजबूत हुआ और आर्थिक विकास को बल मिला। निर्माण कार्यों में मजदूरों की मेहनत से अनेक नई फैक्ट्रियां, उद्योग और इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास संभव हुआ, जिससे राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि हुई। मजदूर आंदोलनों ने श्रमिक अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया, उनके हितों के संरक्षण हेतु नीतियों और कायदों का निर्माण कराया। सरकार ने इस दिशा में श्रम कानूनों का प्रावधान कर मजदूर सुरक्षा की पहल की, जिससे श्रम वर्ग का बेहतर जीवन निर्वाह संभव हो सका।

वहीं, महिलाओं ने सामाजिक और आर्थिक दोनों ही लिहाज से राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान दिया। शिक्षित होने और शिक्षिका बनने की प्रक्रिया ने महिलाओं को स्वावलंबी और स्वाभिमानी बनाया। ग्रामीण और शहरी दोनों स्तर पर महिला उद्यमिता ने आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान प्राप्त करने में मदद दी। सामाजिक तबकों में बदलाव लाने के लिए महिलाओं का सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। नीतिगत सुधारों के साथ–साथ महिलाओं को अवसर देने वाले कदमों ने उनकी स्थिति में सुधार लाने का मार्ग प्रशस्त किया।

दोनों समूहकृमजदूर और महिलाएँकृसामाजिक जागरूकता, आर्थिक स्थिरता और गतिशील उद्योगिक ढांचे के निर्माण में अभिन्न भूमिका निभाते रहे। उनका योगदान राष्ट्रीय विकास के विभिन्न पहलुओं में समान रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुआ। इन योगदानों का परिणामस्वरूप देश का सामाजिक ताना–बाना मजबूत हुआ, आर्थिक विकास का समर्थन किया और समग्र रूप से नव भारत के सर्वांगीण निर्माण में योगदान सुनिश्चित किया। हालांकि, इन्हें अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें समकक्ष अवसर और रोजगार की सुविधा मुख्य थीं। इन सभी प्रयासों व संघर्षों का नतीजा रहा कि भारत ने एक मजबूत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में अपनी स्थिति कायम की।

## Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

## संदर्भ सूची–


1. सरकार, भारत. (1950). भारत का संविधान. नई दिल्ली, भारत सरकार प्रकाशन. (पृ. 23–27)
2. शर्मा, रामआधार. (2014). भारतीय श्रमिक आंदोलन का इतिहास. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. (पृ. 112–118)
3. सिंह, योगेंद्र. (2009). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशंस. (पृ. 65–72)
4. देसाई, नीरा. (2011). भारतीय महिलाओं की स्थिति. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन. (पृ. 89–95)
5. सरकार, भारत. (2019). श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली, भारत सरकार. (पृ. 41–48)
6. कुमार, अरविंद. (2016). भारत में औद्योगिकीकरण और श्रमिक. पटना, ग्रंथ शिल्पी. (पृ. 134–140)
7. घोष, जयति. (2018). भारतीय अर्थव्यवस्था और श्रम. नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (पृ. 156–162)
8. चटर्जी, पार्थ. (2010). राष्ट्र और सामाजिक परिवर्तन. कोलकाता, आनंद पब्लिशर्स. (पृ. 77–83)
9. सरकार, भारत. (2015). महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट. नई दिल्ली, भारत सरकार. (पृ. 52–59)
10. वर्मा, सविता. (2017). महिला सशक्तिकरणरू सिद्धांत और व्यवहार. जयपुर, किताब महल. (पृ. 101–107)
11. सेन, अमर्त्य. (2001). विकास का अर्थ. नई दिल्ली, पेंगुइन इंडिया. (पृ. 36–42)
12. पांडेय, राजकुमार. (2013). भारतीय समाज और श्रम वर्ग. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन. (पृ. 90–96)
13. सरकार, भारत. (1991). नई आर्थिक नीति दस्तावेज. नई दिल्ली, भारत सरकार. (पृ. 14–19)
14. मिश्रा, प्रमिला. (2018). ग्रामीण महिला उद्यमिता. लखनऊ, नवचेतना प्रकाशन. (पृ. 58–64)
15. दत्त, रुद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. (2016). भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कंपनी. (पृ. 421–428)।


## Cite this Article

***"डॉ० स्वर्ण मणि", "स्वतंत्रता के बाद नव भारत में मजदूर और महिलाओं का योगदान",*** ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

**Journal URL-** https://www.researchprojournal.com/

**DOI-** 10.70650/rpimj.2025v1i200009